जीविका
ग्रामीण विकास विभाग, बिहार सरकार

जीविका समाचार पत्रिका

।। माह – दिसम्बर 2023 ।। अंक – 41 ।। केवल आंतरिक वितरण हेतु।।

अन्दर के पृष्ठों में...

जीविका की मदद से मुस्कान ने भरी सफलता की उड़ान
(पृष्ठ – 02)

तेल की धार से गरीबी पर प्रहार सफल उद्यमी बनी शबनम
(पृष्ठ – 03)

सृजन एग्रो प्रोड्यूसर कंपनी ने लिखी सफलता की नई इबारत
(पृष्ठ – 04)

नवाचार से जीविका दीदियों को मिली नई पहचान
स्वरोजगार से खुली आर्थिक सशक्तीकरण की राह

जीविका द्वारा सामुदायिक संगठनों का गठन एवं जीविकोपार्जन गतिविधियों से जोड़कर ग्रामीण क्षेत्र के गरीब परिवारों को सामाजिक एवं आर्थिक रूप से सशक्त किया जा रहा है। जीविका के प्रयासों का ही परिणाम है कि आज राज्य की लाखों महिलाएं आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनी हैं। जीविका समूह से जुड़ी महिलाओं ने जीविकोपार्जन के विविध क्षेत्रों के अलावा नवाचार की दिशा में भी अपना कदम बढ़ाया है। साथ ही इन नवाचारों में कामयाबी हासिल कर जीविका दीदियों ने अपनी एक नई पहचान स्थापित की है। जीविका दीदियों के नवाचारों से ग्रामीण क्षेत्रों में विविध आर्थिक गतिविधियाँ संचालित है। इन गतिविधियों से जहां ग्रामीण परिवारों की आर्थिक स्थिति में सुधार हुआ है, वहीं राज्य की अर्थव्यवस्था को भी मजबूती मिल रही है।

जीविका समूह से जुड़े परिवारों द्वारा की जा रही जीविकोपार्जन गतिविधियों में मुख्य रूप से कृषि, पशुपालन, मुर्गी पालन, मछली पालन, सूक्ष्म उद्यम, सूक्ष्म व्यापार, शहद उत्पादन, हस्तशिल्प–कला एवं हैंडलूम वस्त्रों का निर्माण, ग्राहक सेवा केंद्र आदि शामिल हैं। वहीं, दीदी की रसोई, दीदी की नर्सरी, ग्रामीण बाजार, नीरा उत्पादन, बालाहार उत्पादन जैसे नवाचार भी शामिल हैं। जीविका दीदियों द्वारा विभिन्न प्रकार के उत्पादों का निर्माण करने के साथ ही इसे व्यवसायिक रूप प्रदान करने के लिए बड़ी संख्या में उत्पादक समूह एवं उत्पादक कंपनियों का भी गठन किया गया है। उत्पादक कंपनियां जीविका दीदियों द्वारा उत्पादित वस्तुओं के विपणन का कार्य करती हैं जिससे दीदियों के उत्पाद को नई पहचान तो मिलती ही है। वहीं उत्पादों की बिक्री में मदद और उसकी उचित कीमत मिल रही है।

जीविकोपार्जन के क्षेत्र में जीविका दीदियों की पहलकदमियाँ

जीविका दीदियों द्वारा विभिन्न विभागों के समन्वय से जीविकोपार्जन की कई गतिविधियों का संचालन सफलतापूर्वक किया जा रहा है। इन गतिविधियों ने जहां जीविका दीदियो ं को नई पहचान दी है, वहीं उनके आर्थिक सशक्तीकरण का मार्ग प्रशस्त किया है। इन गतिविधियों में सूक्ष्म उद्यम, सतत् जीविकोपार्जन योजना, दीदी की रसोई, दीदी की नर्सरी, मत्स्य पालन, दीदी का सिलाई घर आदि प्रमुख है।

सूक्ष्म उद्यम :– ग्रामीण उद्यमिता को बढ़ावा देने की दिशा में जीविका दीदीयों द्वारा विभिन्न प्रकार के सूक्ष्म उद्योग स्थापित किये जा रहे हैं। इसके लिए उन्हें उद्योग विभाग के माध्यम से आर्थिक सहयोग प्रदान किया जा रहा है। ग्रामीण स्तर पर उद्यमिता को बढ़ावा देने के लिए मुख्यमंत्री उद्यमी योजना, पी.एम.एफ.एम.ई., पी.एम.ई.जी.पी., शुरुआती ग्राम उद्यमिता कार्यक्रम, एम.ई.डी. जैसी योजनाएँ संचालित की जा रही हैं। इन योजनाओं का लाभ लेकर हजारों जीविका दीदियाँ उद्यमी बनी हैं।

सतत् जीविकोपार्जन योजना :– शराबबंदी से प्रभावित परिवारों एवं समाज के अत्यंत निर्धन परिवारों को जीविकोपार्जन के साधन उपलब्ध कराने के उद्देश्य से सतत् जीविकोपार्जन योजना की शुरुआत वर्ष 2018 में हुई। वर्त्तमान समय में 1.94 लाख से ज्यादा परिवारों ने इस योजना का लाभ लेकर जीविकोपार्जन की गतिविधियों की शुरूआत की। अब ये परिवार अपने उद्यम का सफलतापूर्वक संचालन करते हुए आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बन रही हैं।

दीदी की रसोई– बिहार के बड़े सरकारी अस्पतालों, सरकारी संस्थानों एवं आवासीय विद्यालयों में जीविका दीदियों द्वारा दीदी की रसोई का संचालन सफलता पूर्वक किया जा रहा है। इससे बड़ी संख्या में जीविका दीदियों को रोजगार का अवसर हासिल हुआ है, साथ ही अस्पतालों में मरीजों एवं उनके परिजनों को गुणवत्तापूर्ण भोजन उपलब्ध हो रहा है। वर्तमान में 199 जीविका दीदी की रसोई संचालित है।

दीदी की नर्सरी :– मुख्यमंत्री निजी पौधशाला योजना के तहत जीविका दीदियां 'दीदी की नर्सरी' का संचालन सफलता पूर्वक कर रही हैं। इससे दीदियों को रोजगार का नया अवसर हासिल हुआ है। इस कार्य से दीदियां आर्थिक रूप से सशक्त तो हो ही रही हैं, वहीं पर्यावरण के सरंक्षण में भी मदद मिल रही है। वर्तमान में 789 जीविका दीदी की नर्सरी संचालित है।

मत्स्य पालन :– जल जीवन हरियाली अभियान के तहत जिला प्रशासन द्वारा आवंटित 106 सार्वजनिक तालाबों में जीविका दीदियों द्वारा मत्स्य पालन का कार्य किया जा रहा है। इससे उन्हें अच्छी आय हो रही है। साथ ही इससे जल संरक्षण में भी मदद मिली है।

मधुमक्खी पालन :– मधुमक्खी पालन का कार्य भी जीविका दीदियों द्वारा बड़े पैमाने पर किया जा रहा है। इस गतिविधि से जीविका दीदियों द्वारा शहद का उत्पादन किया जा रहा है। इससे उन्हें अच्छी आय हो रही है। वर्तमान में 11,789 जीविका दीदियों द्वारा मधुमक्खी पालन किया जा रहा है।

सिलाई केन्द्र :– राज्य के कई जिलों में दीदी का सिलाई केन्द्र का संचालन किया जा रहा है। सिलाई केन्द्र के माध्यम से जीविका दीदियों को रोजगार का नया अवसर प्राप्त हुआ है। इसमें कार्यरत दीदियों को अच्छी आय हो रही है।

ग्राहक सेवा केन्द्र :– जीविका दीदियों द्वारा 5381 ग्राहक सेवा केन्द्र का संचालन करने से ग्रामीण स्तर पर बैंकिंग सेवाओं का विस्तार हुआ है। साथ ही बैंक सखी के रूप में कार्यरत इन दीदियों को भी अच्छी आमदनी हो रही है। इस गतिविधि द्वारा संपूर्ण वित्तीय समावेशन के लक्ष्य को भी पूरा किया जा रहा है।

प्रशिक्षण से खुला रोजगार का द्वार, आत्मनिर्भर बनी नेहा

कटिहार जिले के प्राणपुर प्रखंड की नेहा कुमारी अपने परिवार की आर्थिक स्थिति में सुधार सुधारने में अहम योगदान दे रही हैं। नेहा की माँ बेबी देवी की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं थी। इनके परिवार की आमदनी का मुख्य स्रोत खेती एवं मजदूरी था। बेबी देवी, महादेव जीविका स्वयं सहायता समूह की सदस्य हैं। समूह से जुड़ाव के बाद से ही वह साप्ताहिक बैठकों में नियमित रूप से हिस्सा लेती एवं आर्थिक गतिविधियों की संचालन हेतु समूह से ऋण भी ली है। समूह से ऋण लेकर बेबी ने अपने खेती को उन्नत बनाया।

बेबी की बेटी, नेहा करीब दो साल पहले इंटर की परीक्षा उत्तीर्ण कर ली थी। इसके बाद वह आगे पढ़ना चाहती थी। लेकिन परिवार की कमजोर आर्थिक स्थिति के कारण वह आगे की पढ़ाई नहीं कर पा रही थी। इसी बीच, समूह की बैठक में एक दिन उन्हें दीन दयाल उपाध्याय ग्रामीण कौशल्य योजना के अंतर्गत प्रशिक्षण एवं रोजगार के बारे में जानकारी मिली। बेबी देवी ने अपनी बेटी नेहा को भी इसके बारे में बताया। तदुपरांत जीविका द्वारा रोजगार संसाधन सेवी के माध्यम से उन्हें कौशल विकास हेतु विभिन्न विधाओं में प्रशिक्षण एवं रोजगार की संभावनाओं के बारे में विस्तृत जानकारी दी गई। नेहा ने अपनी इच्छा से रिटेल एंड सेल्स के क्षेत्र में प्रशिक्षण लेकर अपना कैरियर बनाने का फैसला किया।

नेहा ने प्रशिक्षण संस्थान एच.एल.पी.पी.टी., पूर्णिया में चार माह का आवासीय प्रशिक्षण प्राप्त किया। साथ ही उन्हें दो माह का प्रशिक्षण कंपनी में काम दौरान (ऑन जॉब ट्रेनिंग) उपलब्ध कराया गया। प्रशिक्षण पूर्ण होने के उपरांत नेहा को नोएडा की एक प्राइवेट कंपनी में नौकरी मिली। नेहा को वर्त्तमान में चौदह हजार रुपये प्रतिमाह वेतन प्राप्त होता है। साथ ही कंपनी के द्वारा रहने की व्यवस्था भी प्रदान की गयी। वेतन से मिलने वाले पैसे से नेहा ने आगे की पढ़ाई पुनः शुरू कर दी है। इसके अलावा वह अपनी मां को भी पैसे भेजती है। वह अपने परिवार की आर्थिक स्थिति सुधारने में मदद भी कर पा रही है।

जीविका की मदद से मुस्कान ने भरी सफलता की उड़ान

मुस्कान, पटना जिला के बिहटा प्रखण्ड के अमहारा ग्राम की रहने वाली हैं। मुस्कान ने जीविका की मदद से सफलता की उड़ान भरी है। जीविका द्वारा आयोजित रोजगार मेला में मुस्कान को जेट किंग में कैबिन क्रू के रूप में कार्य करने हेतु चयनित किया गया है।

मुस्कान की मां प्रतिमा देवी आदर्श जीविका स्वयं सहायता समूह की सदस्य है। प्रतिमा दीदी अपने बच्चों के पढ़ाई पर पूरा ध्यान देती है। बच्चों की पढ़ाई–लिखाई हेतु उन्होंने जीविका समूह से भी सहयोग लिया है। जीवन में कुछ करने और आगे बढ़ने की लालसा से मुस्कान ने जीविका द्वारा संचालित सामुदायिक पुस्तकालय सह कैरियर विकास केंद्र में दाखिला लिया था। वह प्रतिदिन समय से वहाँ उपस्थित होकर अध्ययन करती हैं। इसी दौरान वहाँ विद्या दीदी ने उन्हें दीन दयाल उपाध्याय ग्रामीण कौशल्य योजना के तहत रोजगार सह मार्गदर्शन मेला के बारे में बताया। बिहटा में जुलाई–2023 में रोजगार–सह–मार्गदर्शन मेला का आयोजन किया गया था। मुस्कान ने भी इसमें हिस्सा लिया। वर्चुअल माध्यम से साक्षात्कार के पश्चात इनका चयन जेट किंग में कैबिन क्रू के रूप में कार्य करने हेतु किया गया। वर्त्तमान में इन्हें जेट किंग के द्वारा सिल्लीगुड़ी में नौ महीने की ट्रेनिंग दी जा रही है। इसमें 3 महीने का 'ऑन जॉब ट्रेनिंग' भी शामिल है। ये प्रशिक्षण पूर्णतः निशुल्क है। ट्रेनिंग अवधि पूर्ण होने के बाद इन्हें क्रू के साथ–ही–साथ एयरपोर्ट लाउन्ज में भी प्लेस किया जाता है। शुरुआती सेवा देने के बाद इन्हें बाद में 'एयर होस्टेस' के साक्षात्कार में बैठने का भी अवसर मिलेगा।

रोजगार मेले में मुस्कान के चयन के उपरांत उनका परिवार काफी खुश है। वह बताती है कि–'उनके गाँव की अन्य लड़कियाँ भी इस प्रकार के रोजगार मेले में भाग लेने के लिए और सामाजिक बंधनों को तोड़कर आगे बढ़ने को इच्छुक हैं। उन्होंने बताया कि जीविका के द्वारा संचालित सामुदायिक पुस्तकालय सह करियर विकास केंद्र के द्वारा युवाओं को रोजगार के बारे में विभिन्न अवसरों के बारे में भी ससमय जानकारी प्रदान किया जा रहा है।'

तेल की धार से गरीबी पर प्रहार कर सफल उद्यमी बनी शबनम

शबनम पूर्णिया जिले के श्रीनगर प्रखंड के कुट्टी धुनैली पंचायत की रहने वाली हैं। इनके पति अमरेन्द्र दिल्ली में काम करते थे। वर्ष 2020 में कोरोना महामारी के कारण देशभर में लॉकडाउन लग गया था। अमरेन्द्र जिस कम्पानी में काम कर रहे थे, वह बंद हो गयी। निराशा का भाव लिए अमरेन्द्र घर लौट गए। बचत की मामूली राशि की मदद से कोऑपरेटिव बाजार में किराये पर एक दुकान लेकर किराना व्यवसाय की शुरुआत की। इसी बीच शबनम दीदी जीविका स्वयं सहायता समूह से जुड़ गई थी। समूह की बैठक में शबनम को कई नई बातों की जानकारी हुई। शबनम अपने पति को हमेशा कुछ नया करने को प्रेरित करती रही।

कुछ नया करने की सोच के साथ उन्होंने सरसों तेल पेराई कर इसे बेचने की योजना बनायी। आरम्भ में 22 हजार रुपये की लागत से एक तेल पेराई मशीन खरीदी। शुद्धता की गारंटी के कारण बहुत कम समय में ही इनके सरसों तेल का व्यवसाय आकार लेने लगा। लेकिन मशीन छोटी होने के कारण उत्पादन मांग के अनुरूप नहीं हो पाता था। तब जीविका समूह द्वारा शबनम दीदी को लघु उद्यम शुरू करने के लिए 75 हजार रुपये ऋण मिला। साथ में व्यवसाय को सफलतापूर्वक संचालन हेतु प्रशिक्षण भी दिया गया। समूह से लिए 75 हजार रुपये एवं बचत की राशि को मिलाकर दो लाख रुपये में तेल पेराई की एक बड़ी मशीन खरीदी। जुलाई 2023 से अब तक इनका व्यवसाय लगातार नई ऊँचाइयों को छू रहा है। वर्त्तमान में प्रतिदिन 45 से 50 लीटर तेल की बिक्री हो जा रही है। रोज नए ग्राहक इनसे जुड़ रहे हैं। अब शबनम दीदी और उनके पति दोनों इसी व्यवसाय को सफलतापूर्वक संचालित कर रहे है। इनके द्वारा उत्पादित सरसों तेल 'स्वागत ब्रांड' के नाम से बिक्री हो रहा है। इनके उत्पादित सरसों तेल की शुद्धता की झांस के लोग मुरीद हो रहे हैं। प्रतिमाह इस व्यवसाय से इन्हें 35 से 40 हजार रुपये की आमदनी हो रही है। शबनम दीदी का सपना अपने 'स्वागत ब्रांड' को राष्ट्रीय स्तर का ब्रांड बनाने का है।

मधु मसाला नाम से मिली पहचान

भागलपुर जिला के जगदीशपुर प्रखंड अन्तर्गत बुलाआचक पंचायत की रहने वाली मधु कुमारी ने एक सामान्य गृहणी से मसाला उद्यमी बन कर एक मिसाल कायम की है। मधु द्वारा उत्पादित स्वादिष्ट मसाले, पौष्टिक सत्तू–आटा और शुद्ध बेसन ने ग्राहकों को काफी आकर्षित किया है। जीविका समूह से ऋण लेकर खाद्य प्रसंस्करण उद्यम की शुरुआत करने वाली मधु अब अपने मसाला उद्यम को 'मधु मसाला' के नाम से विकसित कर रही है। इसके लिए वह प्रधान मंत्री सूक्ष्म खाद्य प्रसंस्करण उद्यम योजना का लाभ लेकर अपने उद्यम को विकसित करने की योजना पर काम कर रही है।

पूर्व में मधु कुमारी का परिवार खेती एवं मजदूरी पर आश्रित था। हालांकि इससे उनके परिवार की आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं हो पा रही थी। ऐसे में उनके पति मजदूरी करने बाहर चले गए थे। मधु वर्ष 2018 में जीविका स्वयं सहायता समूह से जुड़ी। समूह में जुड़ने के बाद उन्होंने उद्यमी बनने का सपना देखा। परिणामस्वरूप उन्होंने समूह से ऋण लेकर स्वरोजगार शुरू करने का मन बनाया। मधु ने अपने समूह से 20 हजार रुपये ऋण लिया और मसाला, आटा–सत्तू और बेसन तैयार करने वाली मशीन खरीदकर खाद्य प्रसंस्करण उद्यम के क्षेत्र में कदम रखा। वह मसाला, सत्तू और बेसन तैयार कर इसकी बिक्री करने लगी। धीरे–धीरे उनका व्यवसाय आकार लेने लगा। व्यवसाय से होने वाली आय से उन्होंने समूह से लिए ऋण की वापसी कर दी। कुछ दिनों के बाद वह इस उद्यम का विस्तार करने के बारे में विचार कर रही थी। इसके लिए उन्होंने समूह से पुनः ऋण लेकर इसका विस्तार किया। इससे उन्होंने अपने उद्यम को एक नया आयाम दिया। अब वह भागलपुर जैसे बड़े बाजार में भी मसाले की बिक्री करती है। मसाले की शुद्धता की गारंटी के कारण उनके उत्पादों की मांग बढ़ने लगी। 'मधु मसाला' के नाम से वह अपने इस मसाले को एक ब्रांड के तौर पर विकसित करने का सपना देख रही है। इसके लिए वह मसाले की उत्कृष्ट गुणवत्ता के साथ–साथ इसके प्रचार–प्रसार पर भी जोर दे रही है। जीविका समूह में जुड़ने के बाद उन्होंने एक उद्यमी बनने का सफर शुरू किया। आज उन्होंने खाद्य प्रसंस्करण उद्यम के क्षेत्र में अपनी एक पहचान बना ली है।

सृजन एग्रो प्रोड्यूसर कंपनी ने लिखी सफलता की नई इबारत

सृजन एग्रो प्रोड्यूसर कंपनी की शुरुआत 9 जुलाई 2021 को कैमूर जिले के भगवानपुर प्रखंड में हुई थी। प्रारंभ में कंपनी के निदेशक मंडल के 10 सदस्य एवं 301 शेयरधारक थे। वर्ष 2021 में कंपनी की अंशपूंजी 5 लाख रुपये थी, जो अब बढ़कर 9.2 लाख रुपये हो गयी है। बिहार में जुलाई 2021 में जीविका के द्वारा कुल 15 कृषि प्रोड्यूसर कंपनी की शुरुआत की गई थी। सृजन जीविका महिला कृषि उत्पादक कंपनी का नाम सबसे ज्यादा कारोबार करने वाली कंपनी में शुमार है। इस कंपनी का दो साल का कारोबार 45 लाख रुपये से ज्यादा है।यह कैमूर जिले की पहली और एकमात्र महिला एग्रो प्रोड्यूसर कंपनी है। सृजन एग्रो प्रोड्यूसर कंपनी का संचालन जीविका दीदियों द्वारा किया जा रहा है। कंपनी की मुख्य कार्यपालक अधिकारी, निदेशक मंडल के सदस्य एवं शेयरधारक सभी महिलाएं ही हैं। कंपनी के द्वारा कृषि उत्पादों की खरीद, प्रसंस्करण, पैकेजिंग और विपणन का कार्य किया जाता है। कंपनी के सभी कार्य महिलाओं द्वारा ही किये जाते हैं।

सृजन एग्रो प्रोड्यूसर कंपनी से जुड़ी दीदियों का कहना है कि शुरुआत में लोग उनपर भरोसा नहीं करते थे। लेकिन सभी दीदियों ने अपनी मेहनत, लगन और ईमानदारी से काम किया, जिससे कंपनी के कारोबार का विस्तार हो रहा है। उत्पादक कंपनी का संचालन करना कोई मामूली बात नहीं थी, लेकिन इन महिलाओं ने कंपनी का सफलतापूर्वक संचालन कर एक मिसाल कायम की है।

सृजन एग्रो प्रोड्यूसर कंपनी के विभिन्न उत्पादों में से गोविन्द भोग चावल की बिक्री सबसे ज्यादा होती है। गोविन्द भोग चावल के एक खास प्रजाति के धान की उपज कैमूर जिले के भभुआ प्रखंड में मोकरी पंचायत के एक छोटे से भू–भाग में की जाती है। यह पंचायत मुंडेश्वरी पहाड़ के नीचे स्थित है। इस पहाड़ी पर बहुत सारे औषधीय गुण वाले पेड़ पौधे मौजूद हैं। बारिश का पानी इन्हीं पौधों का औषधीय गुण समेटकर नीचे स्थित खेतों में बहता है। इस भूमि में उत्पादित गोविन्द भोग चावल की गुणवत्ता और स्वाद काफी बेहतर है। इस चावल की महक ग्राहकों को काफी आकर्षित करती है। सृजन एग्रो प्रोड्यूसर कंपनी ने उच्च गुणवत्ता वाले इस गोविन्द भोग चावल को मोकरी पंचायत से निकालकर ग्राहकों की थाली तक पहुंचाने में मदद की है।

सृजन एग्रो प्रोड्यूसर कंपनी गोविन्द भोग चावल के अलावा मंसूरी चावल, सृजन आटा, सृजन सत्तू, सृजन बेसन एवं दाल के उत्पादन एवं विपणन का कार्य करती है। कंपनी के सभी उत्पाद शुद्ध एवं गुणवत्ता युक्त होते हैं। ये सभी उत्पाद जीविका समूह से जुड़े परिवारों द्वारा उत्पादित किये जाते हैं। वहीं सृजन एग्रो प्रोड्यूसर कंपनी के द्वारा इन उत्पादों को इन किसानों से खरीदकर शुद्धता के साथ इसका प्रसंस्करण, पैकेजिंग एवं विपणन का कार्य किया जाता है।

इस क्षेत्र के किसान पहले अपने उत्पादों की बिक्री के लिए मंडियों का चक्कर लगाते थे। लेकिन अब वे अपनी उपज सीधे सृजन एग्रो प्रोडूसर कंपनी को बेच देते हैं। कंपनी के द्वारा किसानों को उनके उत्पादों के दाम सीधे उनके बैंक खाते में हस्तांतरित किये जाते हैं। कंपनी की मुख्य कार्यपालक अधिकारी का कहना है कि–'किसानों को समय पर उचित मूल्य प्रदान करना हमारी सर्वोच्च प्राथमिकता है। दीदियों की मेहनत, एकजुटता और आपसी विश्वास की वजह से सृजन एग्रो प्रोड्यूसर कंपनी निरंतर प्रगति के पथ पर आगे बढ़ रही है। कंपनी की तरक्की से इससे जुड़ी दीदियों को भी आर्थिक लाभ हो रहा है।'

जीविका, बिहार ग्रामीण जीविकोपार्जन प्रोत्साहन समिति, विद्युत भवन – 2, बेली रोड, पटना – 800021, वेबसाइट : www.brlps.in

- संपादकीय टीम
- श्रीमती महुआ राय चौधरी –कार्यक्रम समन्वयक (जी.के.एम.)
- श्री पवन कुमार प्रियदर्शी – परियोजना प्रबंधक (संचार)

संकलन टीम
- श्री राजीव रंजन – प्रबंधक संचार, बेगूसराय
- श्री विकास राव – प्रबंधक संचार, भागलपुर
- श्री राजीव रंजन – प्रबंधक संचार, नवादा
- श्री रौशन कुमार – प्रबंधक संचार, लखीसराय
- श्री बिप्लब सरकार – प्रबंधक संचार